RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 54 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 24 मार्च, 2019

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 54, 21-24 मार्च 2019 तदनुसार 11 चैत्र, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पुरोहित की घोषणा

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम्।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः।।
समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम्।
वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम्।।

–अथर्व० ३।१९।१,२

शब्दार्थ–मे = मेरा **इदम्** = यह **ब्रह्म** = ज्ञान–बल **संशितम्** = भली प्रकार तीक्ष्ण किया हुआ है। **वीर्यम्** = वारक शक्ति तथा **बलम्** = सम्बल भी **संशितम्** = भली प्रकार तीक्ष्ण है। उनका **संशितम्** = भली प्रकार से तीक्ष्ण किया हुआ। **क्षत्रम्** = क्षात्रबल **अजरम्** = जीर्ण न होने वाला **अस्तु** = है, **येषाम्** = जिनका मैं **जिष्णुः** = जयशील **पुरोहितः** = पुरोहित **अस्मि** = हूँ। **अहम्** = मैं **एषाम्** = इनके **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **सं+स्यामि** = एक सूत्र में बाँधता हूँ और इनके **ओजः** = ओज, तेज **वीर्यम्** = वारक शक्ति तथा **बलम्** = रक्षा के सामर्थ्य को **सम्** = एक सूत्र में बाँधता हूँ। **अहम्** = मैं **अनेन** = इस **हविषा** = सामग्री द्वारा **शत्रूणाम्** = शत्रुओं की **बाहून्** = भुजाओं को **वृश्चामि** = काटता हूँ।

व्याख्या–राष्ट्र के पुरोहित=नायक में किन भावों का समावेश हो, यह संक्षेप से इन मन्त्रों में अङ्कित है। पुरोहित में सब प्रकार का बल होना चाहिए–क्या ब्राह्मबल और क्या क्षात्रबल। वैदिक पुरोहित की गम्भीर घोषणा सचमुच सबके मनन करने योग्य है–**'संशितं म इदं ब्रह्म'** = मेरा यह ब्राह्मबल सुतीक्ष्ण है, केवल ब्राह्मबल ही नहीं, प्रत्युत **संशितं वीर्यं बलम्** = वारक सामर्थ्य और रक्षण–शक्ति भी तेज है। दूसरों पर आक्रमण करके उनको भगा देने का नाम वीर्य और दूसरों से आक्रान्त होने पर अपनी रक्षा कर सकने को बल कहते हैं। क्षात्रबल के ये दो प्रधान अङ्ग हैं। पूरी शान्ति वहीं होती है–**'यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह'** [य० २०।२५] = जहाँ ब्राह्मबल और क्षात्रसामर्थ्य समान गतिवाले होकर एक–साथ विचरते हैं। क्षत्रिय में केवल क्षात्रबल है, किन्तु ब्राह्मण में ब्राह्मण तथा क्षात्रबल दोनों हैं। यही ब्राह्मण का उत्कर्ष है। क्षात्रबलविहीन ब्राह्मण सचमुच हीन है, वह पूर्ण ब्राह्मण नहीं है। जिस राष्ट्र का नेता वेदानुकूल होगा, सचमुच उसका क्षात्रतेज अजर=अक्षीण=अहीन ही रहेगा।

राष्ट्र को सङ्गठित रखना तथा राष्ट्र के ओज–वीर्य आदि की रक्षा करना पुरोहित का काम है–

'समहमेषां राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम्'–मैं इनके राष्ट्र को तथा ओज, बल, वीर्य को एक सूत्र में पिरोके रखता हूँ। नेता को चाहिए कि समूचे राष्ट्र के सामने एक महान् उद्देश्य रखे। इससे राष्ट्र में एकता बनी रहती है। इस एकता के रहने से ही पुरोहित कह सकेगा–**'एषां राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि'** [अथर्व० ३।१८।५]–मैं इनके राष्ट्र को सुवीर बनाकर बढ़ाता हूँ।

जिस प्रकार के शिक्षक होंगे, वैसे ही शिष्य होंगे। यदि शिक्षक हीनवीर्य, हतोत्साह होंगे तो राष्ट्र में उत्साह–बलादि का अभाव रहेगा। वैदिक पुरोहित तो कहता है–

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्रेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः।।

–अथर्व० ३।१९।४

उनके हथियार कुठार से तीक्ष्णतर और आग से भी अधिक तीक्ष्ण हैं, इन्द्र के वज्र= बिजली से भी तेज हैं, जिनका मैं पुरोहित हूँ। उग्र पुरोहित के शिष्य सभी प्रकार से उग्र होंगे, अतः राष्ट्र की उन्नति चाहने वालों को उग्र पुरोहित उत्पन्न करने चाहिएँ। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

प्रातर्जितं भगमुग्रꣳहुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह।।

–यजु० ३४.३५

भावार्थ–हे सर्वशक्तिमन्! महातेजस्विन् जगदीश! आपकी महिमा को कौन जान सकता है? आपने सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, मंगल, शुक्रादि लोकों को बनाया और इनमें अनन्त प्राणी बसाये हैं। उन सबको आपने ही धारण किया और उनमें बसने वाले प्राणियों के गुण–कर्म–स्वभावों को आप ही जानते और उनको सुख दुःखादि देते हैं। ऐसे महासमर्थ आप प्रभु को, प्रातः काल में हम स्मरण करते हैं। आप अपने स्मरण का प्रकार भी मन्त्रों द्वारा बता रहे हैं, यह आपकी अपार कृपा है, जिसको हम कभी भूल नहीं सकते।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।

–यजु० ३४.३६

भावार्थ–हे भजनीय प्रभो! आप सारे संसार को उत्पन्न करने वाले और सदाचारी अपने सच्चे भक्तों के लिए सच्चा धन ऐश्वर्य प्रदान करते हैं। जिस बुद्धि से आप हम पर प्रसन्न होवें, ऐसी बुद्धि हमें देकर हमारी रक्षा करें। सारे सुखों की जननी उत्तम बुद्धि ही है। इसलिए हम आपसे ऐसी प्रज्ञा मेधा उज्ज्वल बुद्धि की प्रार्थना करते हैं। भगवन्! गौ–घोड़े आदि हमें देकर हमारी समृद्धि को बढ़ाएँ और अच्छे–अच्छे विद्वान् और वीर पुरुषों से हमें संयुक्त करें, जिससे हमें किसी प्रकार का भी कष्ट न हो।

इस वैज्ञानिक युग में उत्तम आत्म चरित्र निर्माण की अति आवश्यकता है

ले.-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़ निवास मोहकमपुर देहरादून, उत्तराखण्ड

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थों में उत्तम चरित्र निर्माण पर अत्यधिक बल दिया है। अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के केवल ग्यारह सम्मुलास चरित्र संस्कार व भ्रान्ति रहित जीवन के संस्कार बनाने के लिये लिखे है। उनका मानना था। मनुष्य समाज की ईकाई है, यदि मनुष्य का उत्तम चरित्र रहेगा तो परिवार व समाज भी उत्तम रहेगा।

पञ्चस्वन्तः पुरूष आ विवेश। (यजु०)

मानव को उत्तम चरित्रवान स्वभाव बनाने के लिये सर्व प्रथम पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए। और पुरूष पांच के भीतर स्थिर हैं प्रत्येक जहां अपने आप में ही नहीं परिवार में भी प्रविष्ट है, और एक राष्ट्र में प्रविष्ट है, विश्व में प्रविष्ट है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है, और किसी परिवार का अंग है, और किसी समाज का सदस्य है, और राष्ट्र का भी सदस्य है। विश्व का सदस्य है, अपने परिवार व अन्य परिवार के सहयोग से उसका पारिवारिक जीवन है, वह समाज का राष्ट्र का विश्व का नागरिक हैं और उसके रिश्ते नाते में कई भूमिकाएं हैं। वह अपने अन्दर पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन करें। मानव जीवन पांच शाखाऐं है। बहुत कम लोग इन चरित्रों को समझते है उन पर चलते है। धर्मात्मा समाज सुधारक आदर्श पुरूष वही है जो निम्न पांच चरित्रों को अपने जीवन में धारण करता है वह यह है।

1. वैयक्तिक चरित्र +2. पारिवारिक चरित्र+ 3. सामाजिक चरित्र +4. राष्ट्रीय चरित्र +5. वैश्विक चरित्र।

नोट: उक्त पांच चरित्रों के संस्कार वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से ही प्राप्त हो सकते है। कृपया पांच चरित्रों का विश्लेषण स्वयं कीजियेगा।

समाज और व्यक्ति का उत्कर्ष

जिस समाज से परमार्थ वृति नहीं होगी, उसका अस्तित्व कायम रहना असम्भव होगा। परिवार समाज व्यवहारिक सम्बन्धों में परस्पर प्रेम और सहानुभूति आत्मीयता की भावनाऐं नष्ट हो जाए तो समाज के अविकसित असमर्थ, वृद्ध, अपंग, अपाहिज, दुखी लोगों का जीवन दूभर हो जायेगा। लोगों का जीवन विशेष कर समाज में एक दूसरे के प्रति अविश्वास सन्देह, भय शंका की वृद्धि होगी। इससे समस्त समाज में विकृतियां, दोष पैदा हो जायेंगे। समाज में सहानुभूति सौजन्य सेवा, सहायता सहयोग संगठन आदि पर समाज का विकास निर्भर करता है। ये सब परमार्थ परार्थ दूसरों के लिए जीवन दान से ही सम्भव हैं स्वार्थ और सकीर्णता से समाज में विघटन संर्घष आदि का ही पोषण होता है।

वसुधैव कुटुम्बकम की भावना

परमात्मा ने जीवन और मृत्यु के बीच आवश्यक साधन सबको समान रूप में वितरित करके यह सिद्ध किया है कि उसने समाज में जाति-पाति भाषा विचार वर्ण भेद में कोई विभिन्नता नहीं की है। सारा विश्व एक प्रेम के सूत्र में बंध सकता है। यदि सभी लोग संसार को एक कुटुम्ब की भावना से देखें और प्रत्येक मनुष्य से वैसा ही प्रेम करें जैसे अपने परिवार के सदस्यों के साथ करते हैं। ईश्वर का आदेश भी ऐसा ही लगता है कि मुझ जैसे पूर्ण और परिपक्व बनो।

सन्मार्ग का सत्यपथ कभी न छोड़े

मानव का जीवन एक कंटीली झाडियों की तरह है, इसे पार करना काफी दूरदर्शिता और विवेक तथा बुद्धिमानी द्वारा ही सम्भव है। सदाचार सतधर्म, विवेक, दूरदर्शिता की सीधी सड़क इसे पार करने के लिए बनी है। उस पर चलते हुए लक्ष्य पर पहुंचना समय साध्य तो है पर जोखिम उसमें नहीं है। अनीति पर चल कर जल्दी काम बना लेने व अधिक कमा लेने का लालच एक छोटी सीमा तक ही सिद्ध होता है। आगे चल कर इसमें भारी विपत्तियां ही विपत्तियां आती है। सबसे बड़ा दण्ड आत्म प्रताड़ण का है। अनीति के मार्ग पर चलने वाले को उसकी अन्तरात्मा निरन्तर धिक्कारती रहती है। मानव जीवन सत्कर्मों द्वारा स्वयं शान्ति पाने और दूसरों को सुख देने के लिए मिला है।

विवेक की कसौटी पर प्रतिपादनों को कसें

कुछ मतभेद लोक कल्याण और व्यक्तिगत स्वार्थ के साथ जुड़े होते है। उनमें से जनमत किसे स्वीकार करे, इसके लिए जनमानस की विवेकशीलता जगानी पड़ती है। और दोनों पक्षों की प्रतिक्रिया परिणति का स्वरूप प्रस्तुत करना पड़ता है। लोक मानस का एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो सामने प्रस्तुत विचार धाराओं में से जो अति उपयोगी श्रेयस्कर दिखाई पड़ती है, उसे धीरे-धीरे तीव्र गति से अपनाने लगता है। अतः जीवन के प्रत्येक प्रदिपादनों को ईश्वरीय धर्म वैदिक ज्ञान कसौटी पर सत्याचरण द्वारा अपनाना ही कसौटी हैं।

काल्पनिक मतभेदों की हठवादिता

संसार के अनेकानेक क्षेत्रों में भी अनेकानेक मान्यताऐं प्रचलित है। कोई भी विवेकशील व्यक्ति एक को सत्य और दूसरे को मिथ्या नहीं कह सकता है। कभी वह परिस्थितियों के अनुसार अधिक सत्य माना जाता होगा, पर अब और नये प्रतिपादन सामने आ जाने पर उस समय के तथाकथित सत्य पर ऊंगली उठने लगी हो। विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर यही हो रहा है जो सत्य के आधार पर होता है, पर नई खोज करने पर पिछले प्रतिपादनों का खण्डन होता रहता है। धार्मिक क्षेत्र में छाये हुए अन्धविश्वास प्रपंच बहकावे अपने ढंग के अनोखे है। गुरूडम इसी आधार पर पनपा है। एक पंथ वाले अपने शिष्यों को दूसरे पंथ वालों के यहां जाने से इसलिए रोकते है कि कही उनकी विवेक बुद्धि जाग न जाए। इसी आधार पर दुराग्रहों की अपनी-अपनी परिधि जमी हुई है। विचारशील व्यक्तियों का कर्त्तव्य है। इन अन्ध परम्पराओं से जनता को सन्मार्ग दिखाए ये तभी सम्भव है जब सभी सृष्टी क्रमानुसार वेद की मान्यताओं व सत्य ईश्वरीय धर्म के मार्ग पर चलने की समाज को प्रेरणा देवे।

हम सब सत्य के शोध के विद्यार्थी है।

ईश्वर द्वारा प्रकृति का क्रम स्थिर जैसा प्रतीत होता है। मोटी दृष्टि से सम्पूर्ण सृष्टि अपने स्थान पर यथावत स्थिर मालूम पड़ती हैं पर बारीकी से देखने पर उन सब में गतिशीलता परिपूर्ण वेग के साथ काम करती दिखाई देती है। अणु परमाणु अपने केन्द्र के इर्द-गिर्द उसी क्रम से घूमते दिखाई देते है। और उनकी गतिशीलता ही खगोल के वर्तमान स्वरूप को बनाए हुए है, स्थिर होने पर तो वे अपना अस्तित्व ही गवां बैठते। इस ईश्वरीय क्रिया को ऋत सत्य कहते है। सृष्टि में जो आंखों से दृष्टि गोचर हो रहा है। वह दिखने में तो सत्य है पर नाशवान है, किन्तु उसका बीच रूपी तत्व ऋत सत्य है हम सभी इसी ऋत सत्य के विद्यार्थी है।

सहयोग और समन्वय का मार्ग अपनाऐं।

संघर्ष और सहयोग दो ही मार्ग ऐसे है जिनमें से किसी एक को चुनकर समस्याओं का समाधान सोचा जाता है। संघर्ष का तात्पर्य यह है कि अपनी मर्जी को दूसरों पर थोंपना। बलवान निर्बलों को दबाकर अपनी मर्जी पर चलाते है। अपनी नीति समर्थ असमर्थो के प्रति अपनाते है। सहयोग में अधिकांश लालच देकर वांछित किया जाता है। अतः सहयोग यदि निस्वार्थ रूप से किया जाये तो वह समन्वय का मार्ग बनता है।

आर्थिक समानता की आवश्यकता।

अमीरी और गरीबी की विभाजन रेखा भी कष्ट कारक है। संसार में उतनी ही मात्रा में प्रकृति पदार्थ उत्पन्न करती है, जिससे सब मनुष्यों का गुजारा हो जाए। परन्तु लोभी व अधिक जमा करने का लालच उक्त खाई पैदा करता है। इसलिए मिल बांट कर खाने की व संग्रह करने की समानतावादी नीति ही सबको अपनानी चाहिए।

बारूद के एक ढ़ेर पर बैठी है यह दुनिया

इस लेख व इस शीर्षक का मेरा आशय है कि समाज में अणुबम व परमाणु बम से भी खतरनाक वैचारिक, धार्मिक आर्थिक मतभेद क्यो पनपते है जब मानव निजी स्वार्थ में अमीरी गरीबी की दीवार, ऊंच-नीच, छोटी जाति बड़ी जाति की दीवार, ईश्वरीय प्रदत भूमि पर अत्यधिक कब्जा करने की दीवार, भ्रष्टाचार व अत्याचार से धन संग्रह की दीवार, क्षेत्र वाद प्रान्तवाद, राष्ट्रवाद की दीवार, अन्याय करने की दीवार, किसी के पास महल और किसी के सिर पर छत न होने की दीवारों से सब समाज को तोड़ रही है, और संसार शान्ति गृह युद्ध की डगर पर अग्रसर है। उक्त समस्याओं के निवारण के लिए केवल महर्षि दयानन्द जी ने मार्ग बताया था, और उक्त समस्याओं के निदान के लिए आर्य समाज वैचारिक क्रान्तिकारी संगठन खोला था परन्तु वर्तमान में आर्य समाज भी नगाडों की गूंज में खोता जा रहा है तथा अपने मूल सामाजिक मूल सिद्धान्तों से पीछे हटता जा रहा है। उक्त वैचारिक बारूदों से बचाने का एक मात्र विकल्प आर्य समाज संगठन है।

सम्पादकीय

अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू

शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर वर्ष मेले।
वतन पे मरने वालों का यही बाकि निशां होगा।।

भारत भूमि धन्य हैं जहां पर समय-समय पर मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने वीर पैदा होते रहे हैं। **माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम** अर्थात् यह भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ, इसकी रक्षा के लिए हम अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे। वेद का यह आदर्श वाक्य हमारे देश के वीर शहीदों पर सार्थक होता है, जिन्होंने इस मातृभूमि को विदेशियों की दासतां से मुक्त करने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया, हंसते-हंसते फांसी के फंदों को चूम लिया। पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े जाने के समय से लेकर देश के आजाद होने तक हमारे देश में सहस्रों ऐसे वीर युवकों ने जन्म लिया जिन्होंने हंसते-हंसते फांसी का फंदा अपने गले में डाल लिया और मातृभूमि की स्वतन्त्रता संग्राम रूपी महायज्ञ में अपने जीवन को अर्पण कर दिया। भारत माता के सच्चे सपूतों ने मृत्यु का आलिंगन करते हुए अपने जीवन को राष्ट्र के लिए भेंट कर दिया। संसार में अधिक संख्या उन लोगों की है जो प्रत्येक क्षण अपनी जीवन अवधि को बढ़ाने तथा अपने सुख और सम्पत्ति के साधनों को इकट्ठा करने में लगे रहते हैं। बहुत कम ऐसे हुआ करते हैं मृत्यु में जीवन की तलाश किया करते हैं। भारत के क्रान्तिवीर ऐसे ही श्रेष्ठ व्यक्तियों में से थे। वे निरन्तर मृत्यु में जीवन खोजा करते थे और हम उनके पवित्र जीवन का अनुसरण करते हुए यह स्पष्ट अनुभव करते हैं कि उन्हें मृत्यु कभी भी भयप्रद नहीं दिखाई दी।

भारत माता के बन्धनों को तोडने वाले और उसे स्वतन्त्र देखने की चाह रखने वाले इन नर वीरों में से किस को अधिक बलिदानी, त्यागी और तपस्वी कहा जाए यह विकट समस्या है। भरी जवानी में प्राणों का, अपने माता-पिता का, संसार की मान प्रतिष्ठा का और धन-वैभव का त्याग तो कोई तपस्वी और त्यागी भी नहीं कर सकता है। परन्तु अपना सर्वस्व त्याग करने वाले इन वीरों की निराली शान यह है कि इन्होंने जहां अपने लिए कुछ भी अपेक्षा नहीं की वहीं जननी जन्मभूमि और भारत माता के लिए सब कुछ त्याग किया। आज देश आजाद है परन्तु यह आजादी हमने कैसे प्राप्त की इसका इतिहास रोंगटे खडे कर देने वाला है। आज का भारतीय नौजवान इन गुलामी के दिनों का अनुमान नहीं लगा सकता जिन गुलामी की जंजीरों को तोडने के लिए भारत मां के अमर सपूतों ने हंसते हंसते फांसी के फंदों को चूमा था। इन वीरों के लिए मातृभूमि को आजाद कराने का सुख स्वर्ग के सुख से भी बढ़कर था। **जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी** अर्थात् जन्म देने वाली माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। इस आदर्श भावना को इन क्रान्तिवीरों ने अपने जीवन में अपनाया था। **स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः** गीता का यह संदेश इन वीरों का आदर्श वाक्य था। **वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहितः** अर्थात् हम इस राष्ट्र के जागरूक प्रहरी हैं, यह भाव लेकर वे वीर सदैव मातृभूमि की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे।

23 मार्च 1931 का दिन वह भारतवासी कभी नहीं भुला सकेंगे जब महान क्रान्तिकारी भगत सिंह, राजगुरू, और सुखदेव इन तीनों को अंग्रेज सरकार ने लाहौर की सैंट्रल जेल में फांसी पर लटका दिया था। साहसी वीर युवकों ने जल्लाद को गले में फंदा नहीं डालने दिया और स्वयं निर्भीक होकर वन्दे मातरम् का जयघोष करते हुए उसे अपने गले में डाला। सरदार भगत सिंह का जन्म एक आर्य परिवार में हुआ था और उन्हें देश भक्ति के संस्कार बचपन में ही मिले थे। भगत सिंह के उपर बचपन में ही इन संस्कारों का प्रभाव पडा और वे भी एक महान देशभक्त बनें। दादा ने बडे प्यार से भगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीति से करवाया था। इन तीन शहीदों में दो पंजाब के थे, भगत सिंह तथा सुखदेव। श्री सुखदेव का जन्म 16 मई 1907 को लुधियाना में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राम लाल थापर था। सुखदेव के पिता का देहावसान 1910 में लायलपुर में हो गया जहां वह अपना कारोबार किया करते थे। इस प्रकार सुखदेव का पालन पोषण इनके ताया श्री चिन्तराम जी द्वारा हुआ। श्री चिन्तराम जी एक महान देशभक्त थे और वैदिक धर्म के अनुयायी थे। वह घर के सभी बच्चों को राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति की कहानियां सुनाया करते थे। इन कहानियों को सुखदेव बडे मनोयोग से सुना करते था और सोचा करता था कि बडा होकर मैं भी वीर सिपाही और देशभक्त बनूंगा। सुखदेव सबसे अधिक प्रभावित झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से थे।

राजगुरू महाराष्ट्र के रहने वाले थे इनका जन्म पूना में 1909 में हुआ था। वह छत्रवंशी राजगुरू परिवार के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे। इनका पूरा नाम शिवराम हरिराज गुरू था। किन्हीं विपरीत परिस्थितियों में वे बचपन से ही घर त्याग कर बनारस आ गए थे और फिर उनके जीवन का अधिकांश समय काशी में ही संस्कृत पढ़ने, लाठी और कुश्ती आदि सीखने में बीता था। वह हिन्दी, गुजराती, मराठी और संस्कृत अच्छी तरह जानते थे। आगे चलकर वे भी क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गए। राजगुरू बहुत साहसी युवक थे और प्रत्येक कार्य को करने के लिए सबसे आगे रहते थे। कोई भी संगठन का कार्य हो वे उसे अपने उपर ले लेते थे। सरदार भगत सिंह हर काम में राजगुरू को अपने साथ ले जाने का आग्रह करते थे।

23 मार्च इन तीनों शहीदों का बलिदान दिवस है। शहीदों के बलिदान दिवस पर हमें भी देश सेवा का व्रत लेना चाहिए। इन वीर शहीदों ने देश की आजादी के बाद जिस उत्तम,श्रेष्ठ और स्वाधीन भारत की कल्पना की थी, वीर शहीदों के उसी स्वप्न को पूर्ण करने के लिए हम भी उनके पद्चिह्नों पर चलते हुए देश की तमाम कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करेंगे। आने वाली पीढ़ियों को इन शहीदों के जीवन चरित्र से जागरूक करने का प्रयास करें। देशभक्तों और क्रान्तिकारियों की जीवनियां बच्चों में बाँटे। इन वीरों तथा देशभक्तों के जीवन का अनुसरण करके ही बच्चे राष्ट्र भक्त बन सकते हैं। आज की युवा पीढी को बचाने के लिए, उन्हें राष्ट्र का भविष्य बनाने के लिए हमें प्रयास करने होंगे। युवा पीढ़ी के निर्माण से राष्ट्र का भविष्य तय होगा। इसलिए युवा पीढ़ी को नशे की दलदल से बचाना हमारा कर्त्तव्य है। वीर शहीदों का आदर्श जीवन ही युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हो सकता है। हम सभी शहीदों के बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लें और अपने राष्ट्र को समृद्ध बनाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 1 मई 2019 से 5 मई 2019 तक बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य महावीर मुमुक्षु जी मुरादाबाद के प्रवचन तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा के सुमधुर भजन होंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सपरिवार इस कार्यक्रम में आमन्त्रित हैं। इन तिथियों में कोई भी आर्य समाज अपना कार्यक्रम न रखें।

-वेद आर्य महामन्त्री आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज रमेश नगर करनाल के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। पुरोहित सभी संस्कारों को वैदिक रीति से करने की योग्यता रखता हो। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। आर्य समाज में ही आवास की नि:शुल्क व्यवस्था होगी। इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र-: यशपाल भाटिया -9034860417

यजुर्वेद में गणतन्त्रात्मक

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा। (राज.)

सामान्यत: यह माना जाता है कि ऋग्वेद ज्ञान काण्ड, सामवेद उपासना काण्ड तथा अथर्ववेद विज्ञान काण्ड है। परन्तु वास्तव में यह पूर्ण सत्य नहीं है, प्रत्येक वेद में विविध विषयों पर वर्णन उपलब्ध है। यजुर्वेद में कर्मकाण्ड के अतिरिक्त गृहस्थ आश्रम के धर्म, शिक्षा व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, कृषि विज्ञान यज्ञ, विद्वानों के कर्त्तव्य और राजनीति आदि अनेक विषयों पर चर्चा हुई है। इस लेख में हम यह अध्ययन करेंगे कि यजुर्वेद में गणतन्त्रात्मक शासन के विषय में कहा गया है। हमारे देश में लम्बे समय तक गणतन्त्रात्मक शासन रहा है। भगवान बुद्ध के काल में भी कई गणतन्त्रात्मक राज्य थे। उनका स्वयं का जन्म लिच्छिवी गणतन्त्र के अन्दर ही हुआ था। इस विषय पर हम यजुर्वेद के मन्त्रों पर विचार रख रहे हैं। यजुर्वेद अध्याय 18 मंत्र संख्या 29 में तो केवल ईश्वर को सम्पूर्ण प्रजा का शासक माना गया है-

स्वर्देवाऽअगन्तमामृताऽअभूम प्रजापते: प्रजाऽअभूम वेट् स्वाहा।

पदार्थ-(देवा:) हे विद्वानों। जैसे हम लोग (अमृता) जन्म मरण के दु:ख से रहित हुए (स्व:) मोक्ष सुख को (अगन्म) प्राप्त हो अथवा (प्रजापते:) समस्त संसार के स्वामी जगदीश्वर की (प्रजा:) फलने योग्य प्रजा (अभूम) हों तथा (वेट्) उत्तम क्रिया और (स्वाहा) सत्य वाणी से युक्त (अभूम) हों वैसे तुम भी होओ।

क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि।

मा त्वा हिꣳसीन्मा माहिꣳ सी:। यजु. 20.1

पदार्थ-(क्षत्रस्य योनिरसि) हे राज्य के देने वाले परमेश्वर। आप ही राज्य सुख के परम कारण है। (क्षत्रस्य नाभिरसि) आप ही राज्य के जीवन हेतु मैं तथा क्षत्रिय वर्ण के राज्य के कारण और राज्य के प्रबन्ध कर्ता हैं। हमें भी ऐसा ही कीजिए। (मा त्वा हिꣳ सी न्मा हिꣳ सी) हे जगदीश्वर। सब प्रजा आपको छोड़कर किसी दूसरे को अपना राजा कभी न माने और आप भी हमें कभी मत छोड़िये।

किन्तु आप और हम लोग परस्पर सदा अनुकूल बरतें।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स्वामी दयानन्द सरस्वती पृष्ठ 228-229 और इसी प्रकार स्वामी दयानन्द यजुर्वेद अध्याय 9 मंत्र संख्या 21 के भावार्थ में लिखते हैं-मैं ईश्वर सब मनुष्यों को आज्ञा देता हूँ कि तुम लोग मेरे तुल्य धर्म युक्त, गुण कर्म और स्वभाव वाले पुरूष को ही प्रजा होओ अन्य किसी क्षुद्राशय पुरूष की प्रजा होना कभी स्वीकार मत करो।

फिर यजुर्वेद अध्याय 6 मंत्र संख्या 2 के भावार्थ में स्वामी दयानन्द लिखते हैं-प्रजाजनों के स्वीकार किये बिना राजा राज्य करने के योग्य नहीं होता।

किसी उत्कृष्ट गुण युक्त व्यक्ति को प्रजा राजा मानकर उसे कर चुकाये।

देवीरापोऽअपां नपाद्यो वऽर्म्मिर्ह विष्यऽइन्द्रियावान् मन्दितम:।

तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा।। यजु. 6.27

पदार्थ-हे (आप:) श्रेष्ठ से व्याप्त (देवी:) शुभ कर्मों से प्रकाशमान प्रजा लोगों। तुम राजसेवी (स्थ) (हो) (शुक्रपेभ्य:) शरीर और आत्मा के पराक्रम के रक्षक (देवेभ्य:) दिव्य गुण युक्त विद्वानों के लिए (येषाम्) जिन (व:) तुम्हारा बली रूप विद्वानों का (य:) जो (अपाम् नयात्) जलों के नाश रहित स्वाभाविक (ऊर्मि:) जल तरंग के समान प्रजा रक्षक (इन्द्रियावान्) जिस में प्रशंसनीय इन्द्रियां होती है और (मन्दितम:) आनन्द देने वाला (हविष्य:) भोग के योग्य पदार्थों से निष्पन्न (भाग:) भाग हैं वे सब तुम (तम्) उसको (स्वाहा) आदर के साथ ग्रहण करो जैसे राजादि सभ्यजन (देवत्रा) दिव्य भोग देते हैं वैसे तुम भी उनको आनन्द (दत्त) देओ।

भावार्थ-प्रजाजनों को यह उचित है कि आपस में सम्मति कर किसी उत्कृष्ट गुण युक्त सभापति को राजा मान कर राज्य पालन के लिए कर देकर न्याय को प्राप्त हों।

यजुर्वेद अध्याय 10 मंत्र संख्या 2, 3 तथा 4 में राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव का वर्णन है। इन मंत्रों में राष्ट्राध्यक्ष के लिए आवश्यक गुणों का वर्णन करते हुए अपने में उन गुणों का होना बताते हुए मत उसको दिये जाने का आग्रह करता है।

वृष्णऽऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णाऽर्मिरसि राष्ट्र दा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्र दा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि।। यजु. 10.2

भावार्थ-इस मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि आप अपने राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव कर रहे हैं, राष्ट्र की रक्षा का भार उसे देने वाले है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे राष्ट्राध्यक्ष के पद हेतु चुन ले। फिर राष्ट्राध्यक्ष के लिए उम्मीदवार में दो गुणों (वृष्ण) सुख के वर्षाने वाला तथा (वृषसेन:) श्रेष्ठ सेनापति का होना आवश्यक है और ये दोनों गुण मुझ में हैं इसलिए राष्ट्र का पालन मुझे दे दें।

फिर तीसरे मंत्र में भी इसी प्रकार का वर्णन है-

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रादा राष्ट्रममुष्मै दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहापः परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्र मे देहि स्वाहाऽयां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देह्यपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहाऽपां गर्भोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि।

भावार्थ-इस मंत्र में भी प्रत्याशी ने राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए निम्न गुणों का होना आवश्यक बताते हुए और स्वयं में इन गुणों का धारण कर्ता होना बताते हुए अपने लिए मत दिये जाने की याचना की है।

अर्थेत (पदार्थ विद्या का ज्ञाता), अमुष्मै (वीर ब्रह्मचारी), अपाम् (जलाशयों का रक्षक) मंत्र में मत देने की प्रार्थना वर्तमान् राष्ट्राध्यक्ष की पत्नी से की गई है अत: उसके गुणों का वर्णन भी किया गया है।

चौथा तो इतना बड़ा है कि उसका भाष्य ही एक लेख हो जाये।

मंत्र संख्या 18 के भाष्य में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-

जो उपदेशक और राजपुरूष प्रजा की उन्नति चाहे तो प्रजा के मनुष्य राजा और राजपुरूषों की उन्नति करने की इच्छा क्यों न करें जो राजपुरूष और प्रजापुरूष वेद और ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर अपनी इच्छा के अनुकूल प्रवृत्त होवे तो उनकी उन्नति का विनाश क्यों न होवे?

यजुर्वेद अध्याय 10 मंत्र संख्या 33 राजा प्रजा की तुलना सिंह वन से की गई है। मंत्र के भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं, दुष्टों से श्रेष्ठों की रक्षा के लिए ही राजा होता है। राज्य की रक्षा के बिना किसी चेष्टावान नर की कार्य में निर्विघ्न प्रवृति कभी नहीं हो सकती+और न प्रजाजनों के अनुकूल हुए बिना राजपुरूषों की स्थिरता होती है। इसलिए वन के सिंहों का समान परस्पर सहायी होकर सब राजा और प्रजा के मनुष्य सदा आनन्द में रहें।

फिर यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र संख्या 19 में राष्ट्राध्यक्ष को गणपति के रूप में रखकर उसके अधिकार एवं कर्त्तव्यों का वर्णन हुआ है।

गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधिनां त्वानिधिपतिꣳ

हवामहे वसो मम आहमजा-निगर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। यजु. 23.19

पदार्थ-हे राष्ट्रपति महोदय। हम लोग (गणानाम्) गणों के मध्य (गणपतिम्) गणों के स्वामी (त्वा) आपको (हवामहे) स्वीकार करते (प्रियाणाम्) अतिप्रिय व्यक्तियों के बीच (प्रियपतिम्) प्रिय व्यक्तियों के पालक (त्वा) आपकी प्रशंसा करते (निधिनाम्) विद्या, धनादि पदार्थों की पुष्टि करने वालों के मध्य (निधिपतिम्) विद्या, धनादि पदार्थों की रक्षा करने वाले (त्वा) आपको (हवामहे) स्वीकार करते हैं। हे (वसो) राष्ट्राध्यक्ष जिस आपके शासन में सब प्राणी बसते है वह आप (मम) मेरे न्यायधीश बनिये! जिस (गर्भधम्) गर्भ के

(शेष पृष्ठ 7 पर)

विश्व शान्ति का केवल एक ही मार्ग है वैदिक धर्म

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

जैसे सत्य एक ही हो सकता है, वैसे ही धर्म भी एक ही हो सकता है बाकी मत, पन्थ, सम्प्रदाय अनेकों हो सकते हैं। धर्म वह होता है जो केवल मानव-मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र की भलाई व कल्याण चाहने वाला हो। किसी भी जीव के प्रति अन्याय, पक्षपात व अत्याचार न करता हो। सब प्राणियों का पिता केवल एक ईश्वर ही है, इसलिए जितने भी प्राणी हैं, वे सभी ईश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपने सभी पुत्र पुत्रियों को एक समान ही प्यार करता है, इसलिए जो धर्म ईश्वर-प्रदत्त होगा, वही धर्म सभी प्राणियों का हितकारी व कल्याणकारी होगा। वेद ईश्वर के बनाए हुए हैं, इसलिए वैदिक धर्म यानि वेदों के अनुसार चलने वाला धर्म ही पूर्ण मानव-मात्र का धर्म हो सकता है। बाकी जितने भी धर्म के नाम से प्रचलित मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं वे सब किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, वह चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, उसके अल्पज्ञ होने की बातें कुछ न कुछ कमी व स्वार्थ जरूर रहेगा। वह अपने ही मत वालों को अधिक पसन्द करेगा और दूसरों के मत वालों को कम पसन्द करेगा। यही भेद-भाव लड़ाई-झगड़े की जड़ है और एक-दूसरे को अलग-अलग करती है और दु:ख का कारण है। विश्व में जितने भी मत व पंथ हैं वे सभी किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुऐ हैं। जैसे ईसाई मत ईशा ने चलाया था। मुस्लिम मत मोहम्मद साहब ने चलाया था, पारसी मत मूसा ने चलाया था, सिख मत गुरू नानक जी ने चलाया था, जैन मत महावीर स्वामी ने चलाया था और बौद्ध मत महात्मा बुद्ध ने चलाया था। इन मतों से विश्व का कल्याण कभी नहीं हो सकता इसलिए इन मतों को मानने से विश्व में सुख व शान्ति कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म से ही विश्व में सुख व शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है? इसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं।

१. वैदिक धर्म सृष्टि के आदि में ईश्वर-प्रदत्त धर्म है:-मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान कम और नैमित्तिक ज्ञान अधिक। पशु-पक्षियों में स्वाभाविक ज्ञान अधिक ओर नैमित्तिक ज्ञान बहुत कम होता है। स्वाभाविक ज्ञान वह होता जो जीवन चलाने के लिए आवश्यक होता है, जैसे खाना-पीना, सोना-जागना, उठना बैठना, रोना-हँसना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कामों का फल नहीं मिलता ये हर जीव के लिए धारण करने जरूरी हैं। दूसरा ज्ञान है नैमित्तिक ज्ञान, यह सिखाने से सीखा जाता है। यह ज्ञान मनुष्य में अधिक है, इसीलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए वह मूर्ख ही बना रहता है। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, यह चारों वेद चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु आदित्य व अँगीरा थे, उनके हृदय में ईश्वर ने चारों वेदों का प्रकाश क्रमश: किया और लोगों को सुनाया। वैसे तो चारों वेदों का सन्देश चारों ऋषियों के मुख से सभी उपस्थित स्त्री व पुरूषों ने सुना पर ब्रह्मा ऋषि ने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उसने अपने शिष्यों को तथा अन्य लोगों को सुनाया। और उन लोगों ने अपने पुत्रों व पौत्रों को सुनाया। इस प्रकार यह सुनाना और सुनना की परम्परा शुरु हो गई। जब तक कागज, स्याही, दवात, कलम का अविष्कार नहीं हुआ और वेद पुस्तकों में लिखा नहीं गया। तब तक यह परम्परा चलती रही। पुस्तकों में लिखे जाने के बाद यह परम्परा प्राय: समाप्त हो गई, पर दक्षिण में अभी तक भी चलती आ रही है। इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते है जिसका तात्पर्य है सुन-सुन कर सीखना। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए यही ज्ञान दिया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। जिन कामों को करने से मनुष्य, धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार यानि वेदानुसार करने से इनके फल मोक्ष को प्राप्त कर सकता है जो मानव-मात्र का अन्तिम लक्ष्य है जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है। इसीलिए हम कह सकते है कि वैदिक धर्म ही एक ऐसा सच्चा धर्म है जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन में स्वयं भी सुखी व प्रसन्न रह सकता है और दूसरों को भी सुखी व प्रसन्न रख सकता है। इसीलिए इसी धर्म को संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने का आधार मानते हैं।

२. वैदिक धर्म ही प्राणी-मात्र से प्रेम रखने की बात कहता है और परस्पर प्रेम से रहने की बात सीखाता है किसी से भी भेद-भाव रखने की बात नहीं सिखाता कारण वैदिक धर्म मानव-मात्र का धर्म है। किसी एक जाति, देश या वर्ग का नहीं है। ईश्वर सबका पिता है और यह धर्म उस पिता के द्वारा ही चलाया हुआ है। हम सब उस परम पिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपनी सन्तान का भला व कल्याण करना चाहता है इसीलिये ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही वेदों का प्रकाश चार ऋषियों के हृदय में किया। वेदों में इतिहास भी नहीं है कारण यह आदि ग्रन्थ है। इतिहास बाद में जाता है।

३. वेदों में न कोई कुछ घटा सकता है और न कोई कुछ बढ़ा सकता है कारण यह पूर्ण ज्ञान है और पूर्ण ज्ञान ईश्वर द्वारा प्रदत्त है। बाकी हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति आदि में ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए काफी मिलावट कर दी है परन्तु वेदों में ये स्वामी ब्राह्मण कोई मिलावट नहीं कर पा रहे हैं कारण इनके सस्वर बोलने में चढ़ाव-उतराव इस किस्म से है जिसके बोल से मिलावट पकड़ी जाती है इससे वे मिलावट नहीं कर पाते इसलिये वह ईश्वरीय ज्ञान आज भी हमारे पास ज्यों का त्यों है। इस अद्वितीयता से यह सिद्ध भी होता है कि यह वेद ज्ञान ईश्वर का है।

४. मानव-मात्र का धर्म वही हो सकता है जो सृष्टि के आरम्भ से चला हो। बाद में चला हुआ धर्म, मानव-मात्र का नहीं हो सकता कारण उस धर्म के चलने से पहले भी कोई धर्म माना जाता होगा। बाद में किसी व्यक्ति द्वारा चलाया हुआ धर्म, धर्म न होकर कोई मत, पंथ व सम्प्रदाय ही है जो कोई वर्ग विशेष द्वारा माना जाता है। इसलिए वैदिक धर्म जो सृष्टि के आरम्भ से चला हुआ है वही मानव-मात्र का धर्म है, अन्य नहीं।

५. वेद किसी देशीय भाषा में नहीं हैं, वेद संस्कृत भाषा में हैं जो सब भाषाओं की जननी है और सृष्टि के आरम्भ की भाषा है। अन्य धर्म ग्रन्थ किसी देशीय भाषा में हैं इसलिए वह मान-मात्र का धर्म नहीं हो सकता।

६. वेद, प्रकृति के अनुसार है, वेदों में प्रकृति के विरूद्ध कोई बात नहीं है। जैसे एक व्यक्ति इतना योगी, तपस्वी व पहुँचा हुआ सन्यासी है जो एक समय में ही मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास व दिल्ली दिखाई देता है। यह बात प्रकृति विरूद्ध है। एक व्यक्ति एक समय में एक ही जगह दिखाई देगा। मनुष्यों द्वारा चलाए गये मत व पंथों में अपना चमत्कार दिखाने के लिए प्रकृति विरूद्ध बातें बतलाते हैं जैसे ईसाई लोग कहते हैं कि ईशा की शरण में आ जाओ तुम्हारे सब पाप धुल जायेंगे और मोक्ष के अधिकारी बन जायेंगे। मुस्लिम भाई कहते हैं कि मोहम्मद साहब ने ऊँगली से चान्द के दो टुकड़े कर दिये। पौराणिक भाई इस मामले में सब से आगे हैं। वे तो कहते हैं कि हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती को कर्ण दान से हुआ था, भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को ऊँगली से उठा लिया। यह सब काम प्रकृति विरूद्ध है इसलिये यह सब असम्भव है। इसलिए यह सब अन्ध विश्वास है। वैदिक धर्म इन सब बातों को नहीं मानता। धर्म केवल बुद्धि, तर्क व विज्ञान सम्मत है, उसी बात को मानता है। जिसे हर व्यक्ति को मानना चाहिए जो यथार्थ है।

आर्य समाज जीरा में ऋषि बोधोत्सव पर्व मनाया गया

दिनांक 4-3-2019 दिन सोमवार को आर्य समाज जीरा में ऋषि बोधोत्सव पर्व बड़ी ही श्रद्धा व हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया, जिसमें सर्वप्रथम प्रात: 9.30 बजे बृहदयज्ञ इस समाज के पुरोहित श्री किशोर कुणाल जी ने करवाया, तत्पश्चात् बोधोत्सव पर्व के बारे में पुरोहित जी ने विस्तार से रोशनी डाली, जिसमें उन्होंने बताया कि पर्व के उद्देश्य तथा संदेश को साकार करने का संकल्प लेकर जाना ही सही मायने में पर्व का मनाना कहा जा सकता है। साथ ही दयानन्द ने जो उपकार तथा वेद प्रचार का कार्य किया, उसे भी हमें जीवन का अंग-संग बनाना, यही है पर्व मनाना। तदन्तर पुरोहित जी ने ''भारत का कर गया बेड़ा पार वो मस्ताना जोगी'' भजन को गाकर लोगों के मन को गद्गद् कर दिया। अन्त में इस समाज के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य ने लोगों के आने का आभार प्रकट करते हुए सबको साधुवाद किया। तथा पुरोहित जी ने भी ढेरों सारी बधाईयाँ दी। सबके लिए मंगल कामना की।

शांतिपाठ के बाद प्रसाद वितरण किया गया यह प्रसाद सावित्री मैडम जी ने खुद अपने घर से बड़ी ही श्रद्धा के साथ बनाकर लाई थी।

पुरोहित-किशोर कुणाल

युवा वर्ग के प्रेरणा स्त्रोत स. भगत सिंह

-डॉ. निर्मल कौशिक, फरीदकोट

कई बार मन में विचार आता है कि वह मां कितनी महान् होगी जिसने भगत सिंह जैसे अदम्य साहसी, शूरवीर और देश भक्त सपूत को जन्म दिया। वह पुण्यशालिनी धरती और भगत सिंह की माता श्रीमती विद्यावती दोनों ही स्तुत्य हैं। मानव समाज हेतु शहादत देना इतना सहज नहीं है। अपने स्वार्थों से ऊपर उठकर देश और कौम के लिए कुर्बानी देना हरेक के बस की बात भी नहीं है। इसके लिए प्रबल इच्छा शक्ति, दृढ़ संकल्प और अच्छे संस्कारों का होना अनिवार्य है। भगत सिंह को यह सब अपने परिवार से विरासत में मिला था। स. भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 को पाकिस्तान के लायलपुर में बंगा नामक गांव में हुआ।

उनके दादा स. अर्जुन सिंह को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं अपने करकमलों से आर्य समाज में दीक्षित किया था। उनके चाचा स्वर्ण सिंह को अंग्रेजों के विरुद्ध जुलूस निकालने के अपराध में जेल हुई थी। जेल में ही उनकी मृत्यु हुई थी। उनके दूसरे चाचा अजीत सिंह 'पगड़ी संभाल ओ जटटा' आन्दोलन के समय जेल गए। जब भगत सिंह का जन्म हुआ था तो उस समय उनके पिता सरदार किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह जेल से मुक्त होकर आए थे और भगत सिंह को सौभाग्यशाली मानकर ही उनका नाम 'भागां वाला' रखा गया था। बाद में विद्यालय में उनका नाम 'भगत सिंह' रखा गया।

श्रीमद् भगवत् गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है:-

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्ततदेवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्त-दनुवर्तते।।3/2।।

अर्थात श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करता है। अन्य पुरुष भी उसका अनुसरण करते हैं। वह जो प्रमाणित कर देता है। लोगों में उसका अनुसरण किया जाता है।

भगत सिंह का जीवन भी युवा वर्ग के लिए अनुसरणीय व अनुकरणीय है। आज की युवा पीढ़ी जो नशों और दुष्वृत्तियों के कारण अपने जीवन को नष्ट करने में लगी है उसे भगत सिंह जैसे महाबलिदानी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपनी शक्ति को देश और समाज के लिए संरचनात्मक कार्यों में लगाना चाहिए। भगत सिंह का जीवन देश और समाज के लिए समर्पित और त्यागमयी जीवन था। उन्हें अच्छे संस्कार और देशभक्ति की भावना अपने परिवार से ही मिली थी। इसके साथ ही उन्होंने अच्छा साहित्य भी पढ़ा था।

'संस्कृते-संस्कृति' भगत सिंह को भारतीय संस्कृति से अत्यन्त लगाव था। वे जानते थे कि संस्कृत के ज्ञान के बिना भारतीय संस्कृति की छवि संस्कृत के अमूल्य ग्रंथों में ही निहित है। इसलिए उन्हें संस्कृत भाषा से अधिक लगाव था। डी.ए.वी. स्कूल लाहौर में पढ़ते समय सबसे अधिक नंबर संस्कृत विषय में लेने वाले भगत सिंह के अंग्रेजी में सभी विषयों से कम नंबर आते थे। इससे उनका संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम परिलक्षित होता है।

भगत सिंह एक संवेदनशील, दृढ़ संकल्प और स्वयं के प्रति अनुशासनात्मक दृष्टिकोण रखने वाले देशभक्त युवक थे। उनका विश्वास था कि क्रान्तिकारी व्यक्ति को कठोर जीवन का व्रत धारण करना चाहिए। और उसे अपने प्राण देकर भी व्रत का पालन करना चाहिए। क्रान्ति अथवा इन्कलाब से उनका अभिप्राय था अन्याय से मुक्त समाज का निर्माण। भगत सिंह के अनुसार क्रान्तिकारी युवाओं के आदर्श गुरु गोबिन्द सिंह और छत्रपति शिवा जी होने चाहिए।

भगत सिंह सदैव 'इन्कलाब जिन्दाबाद' और 'वंदे मातरम्' उद्घोषों को बुलन्द आवाज़ से कहा करते थे। उन्होंने 'मतवाला' पत्रिका के एक अंक 'बलवन्त' नाम से भारतीय नवयुवकों को अपने अस्तित्व और बल का आभास कराते हुए कहा था। 'नवयुवक ही रणचंडी के आधार की रेखा है। नवयुवक स्वदेशी की ऊँची आवाज है। वह महाभारत के भीष्म पर्व की पहली ललकार की तरह विकराल है। रावण के अहंकार की तरह निर्भय है। प्रहलाद के सत्याग्रह की तरह दृढ़ और अटल है।'

हिंसा के विषय में भगत सिंह के विचार अत्यन्त स्पष्ट हैं। उनका कहना है किसी को मानसिक, शारीरिक कष्ट देना हिंसा है लेकिन किसी को दु:ख देने वाले जालिम या अन्यायी को खत्म करना हिंसा नहीं है। भारतीय दर्शन और संस्कृति की विचारधारा उन्हें 'जन्मघुटटी में मिली थी। भगत सिंह अपना पत्र 'ओ३म्' शब्द से आरम्भ किया करते थे। और घण्टों 'गायत्री मंत्र' का जाप किया करते थे। भारत और भारत-माता के लिए आत्म बलिदान देने वाले भगत सिंह एक आदर्श राष्ट्र प्रेमी थे।'

देश प्रेम की अनन्य भावना से ओत-प्रोत भगत सिंह ने राष्ट्रीय एकता के विषय में अपने विचार 1923 में पंजाब हिन्दी साहित्य में भेजे गए एक लेख में इस प्रकार अभिव्यक्त किये। 'सारे देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा। पर सभी एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरुरी है ताकि हम एक दूसरे को भली-भांति समझ सकें।'

भगत सिंह एक युवा क्रान्तिकारी के रूप में स्वतन्त्रता आन्दोलन के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित है। आज भी उनके विचार युवा वर्ग के लिए उतने ही प्रेरणा-स्त्रोत थे। आज भी है और भविष्य में भी रहेगें। भगत सिंह के जीवन पर अनेक भाषाओं और अनेक विधाओं में विपुल साहित्य रचा जा चुका है। युवा वर्ग को इस महान् देशभक्त और वीर सपूत के जीवन और बलिदान के विषय में जानकारी अवश्य होनी चाहिए ताकि भावी पीढ़ी हमारे देश के गौरव शहीदे आज़म भगत सिंह पर और अपने भारत देश पर गर्व कर सकें। निस्सन्देह भगत सिंह एक युवा क्रान्तिकारी व राष्ट्रप्रेमी के रूप में युवा-वर्ग के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

महात्मा चैतन्यमुनि सम्मानित

4 मार्च, 2019 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोधोत्सव के अवसर पर आर्यजगत् की विभूति, चिन्तक, लेखक एवं प्रबुद्ध वक्ता महात्मा चैतन्य मुनि जी को उनके द्वारा वैदिक धर्म एवं सामाजिक क्षेत्र में किए गए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की पुण्य जन्मभूमि टंकारा में 'स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि महात्मा जी ने हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा में उच्च पदों पर रहकर अनेक ही महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। हिन्दी भाषा के लिए तथा साक्षरता अभियान में भी इनकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है तथा इन्हें इन कार्यों के लिए सम्मानित भी किया गया है...ये एक लोकप्रिय वैदिक प्रवक्ता ही नहीं बल्कि प्रबुद्ध साहित्यकार भी हैं। अब तक इनकी लगभग पच्चहतर साहित्यिक एवं आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। स्वामी जी को साहित्य अकादमी सहित अब तक लगभग तीस पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वैदिक प्रवक्ता के रूप में इन्हें सिद्धान्तवादी एवं लोकप्रिय वक्ता के रूप में समादृत किया जाता है। आनन्दधाम आश्रम उधमपुर (जम्मू कश्मीर) ने इन्हें अपना मुख्य संरक्षक एवं निर्देशक मनोनीत किया हुआ है... इसके अतिरिक्त ये उत्कर्ष कलाकेन्द्र (रजि०) के संस्थापक अध्यक्ष भी हैं।

उन्हें यह सम्मान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से टंकारा ट्रस्ट द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में दिया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त समिति के उपप्रधान डा. रमेश आर्य, पतजंलि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. महावीर अग्रवाल, आचार्य इन्द्रदेव, श्रीयोगेश मुजांल, श्रीसुधीर मुंजाल, श्रीलधाभाई पटेल, स्वामी शान्तानन्द, टंकारा को भव्य एवं दर्शनीय रूप देने वाले श्री अजय सहगल एवं श्री हसंमुख परमार आदि अनेक गणमाण्य व्यक्ति समुपस्थित थे।

पृष्ठ 4 का शेष-यजुर्वेद में गणतन्त्रात्मक

समान पूरे देश को अपने गर्भ में दारण करने वाले (त्वम्) आप (आ अजासि) जन्मादि दोष रहित ठीक प्रकार से प्राप्त होते हैं उस (गर्भधम्) देश के स्वामी आपको (अहम्) मैं (आ अजानि) अच्छे प्रकार जानूं।

भावार्थ-इस मंत्र में राष्ट्राध्यक्ष के निम्न गुणों का वर्णन हुआ है।

वह गुणों का स्वामी होता है। वह राष्ट्र का प्रथम पुरूष कहलाता है। अतः वह सर्वप्रिय होता है। राष्ट्र की सम्पूर्ण भूमि, खानों आदि का वही स्वामी माना जाता है। सभी संवैधानिक पदों पर नियुक्तियां उसी के आदेश से होती है। राज्य का बजट भी उसी के स्वीकारने के बाद काम में आता है। वह सम्पूर्ण राष्ट्र के पिता के समान होता है।

यजुर्वेद में राष्ट्र गीत भी दिया गया है, जो इस प्रकार है-

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइष व्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढ़ानड़वानाशुः सप्तिः पुरन्धियोषा जिष्णु रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पताम्।

यजु. 22.22

इस प्रकार हमने देख लिया है कि यजुर्वेद में गणतन्त्र का वर्णन हुआ है।

ऋषि बोधोत्सव

आज दिनांक 03-03-2019 (रविवार) को शिवरात्रि की पूर्व सन्ध्या पर आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री कुलदीप राय आहलुवालिया सपत्नी एवं श्री विशाल गुप्ता सपत्नी यजमान बने। परिवार के बच्चों और नगर से पधारे आर्यजनों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डाली। श्री जीवन आर्य ने यज्ञ वेद मन्त्रों के उच्चारण से सम्पन्न करवाया। तत्पश्चात दयानन्द हाल में बोधोत्सव का कार्यक्रम चला। श्रीमती दुर्गेश नन्दिनी आर्य ने स्वामी दयानन्द पर एक धार्मिक गीत सुनाया, श्रीमती स्नेह चोपड़ा ने भजन के माध्यम से दयानन्द के आरम्भिक जीवन को ताज़ा किया। मंच का संचालन सचिव यशपाल वालिया ने किया। श्रीमती प्रो. डा. सविता ऐरी ने ऋषि दयानन्द को शिवरात्रि के दिन बोध जो प्राप्त हुआ उसी के प्रभाव से ऋषि ने समाज में फैले अंधकार, कुरीतियां और पाखण्ड को दूर भगाने का बिगुल बजा दिया। फिर देव दयानन्द ने वेद और उपनिष्दों के संदेश को उजागर करते हुआ कहा कि ईश्वर एक है और उसी की उपासना करनी चाहिये।

अपने मुख्य उदबोधन में प्रो० डा. पी. एन. चोपड़ा ने कहा कि बालक मूलशंकर का मन्दिर के चूहों द्वारा शिव की मूर्ति पर उछल कूद करते देख पारम्परागत उपासना से विरक्त हो जाना कोई साधारण बात नहीं है, अवश्य पूर्व संस्कारों का खेल है। परिणाम स्वरूप, मूलशंकर 22 वर्ष की आयु में घर छोड़ कर सच्चे शिव की तलाश में घूमते रहे और अन्ततः गुरुवर विरजानन्द की ज्ञान भट्ठी में तप कर समाज और धर्म के क्षेत्र में कार्यरत रहे। विधवाओं की हालत सुधारने के लिए उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया। विधवा विवाह तो आर्य समाज की ही देन है। स्वामी जी ने छूआछूत का पुरज़ोर विरोध किया। धर्म का मूल मन्त्र स्वामी जी ने कहा, सदाचार है। परमेश्वर से ऋषि दयानन्द का साक्षात सम्बन्ध था। आइये, हम आज के दिन इस बोध दिवस पर ऋषि से सीख लें और आर्य समाज की थम गई रफ्तार को तेज़ करें और अपने जीवन को सार्थक बनायें। अंत में प्रो. के. सी. शर्मा ने सभी का धन्यवाद किया। शांति पाठ के पश्चात ऋषि प्रसाद बांटा गया।

-दर्शन गर्ग, कोषाध्यक्ष

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 51वाँ वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

16,17, 18 फरवरी को गुरुकुल का 51वाँ वार्षिक महोत्सव उत्साहमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विशाल फव्वारे का शुभारम्भ डॉ. सोमदेव जी शास्त्री एवं श्री व्रतपाल जी सिन्धु ने किया इन्ही के करकमलों से स्वर्गीय चौधरी मित्रसेन जी आर्य एवं स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की मूर्तियों का अनावरण हुआ। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ के साथ उच्च कोटि के विद्वानों का उपदेश तथा कन्या गुरुकुल की कन्याओं एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की आकर्षण व्यायाम शक्ति प्रदर्शन एवं व्याख्यान शास्त्रार्थ आदि के प्रभावशाली कार्यक्रम हुए अंत में गुरुकुल के संचालक श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने सभी वक्ताओं एवं आर्य जनता का आभार प्रकट किया कन्याओं एवं ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दिया।

बोधोत्सव मनाया

केन्द्रीय आर्य सभा (रजि०) अमृतसर के तत्वावधान में युग प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवम् बोधोत्सव के उपलक्ष्य में चतुर्वेद शतकम् यज्ञ 01 मार्च 2019 से 03 मार्च 2019 तक आर्य समाज शक्ति नगर, अमृतसर के प्रांगण में प्रिं० श्री जे.पी. शूर प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा पंजाब की अध्यक्षता में बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय एवं दयानन्द मठ दीनानगर से पधारे ब्रह्मचारियों ने करवाया। श्री इंद्रपाल जी आर्य, गौरव तलवाड़ विवेक आर्य 'पथिक' ने प्रभु भक्ति एवं ऋषि महिमा के भजनों का गुणगान कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया।

'आर्य महा सम्मेलन' के मुख्य वक्ता आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक प्रवक्ता ने अपने ओजस्वीं प्रवचनों में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज, देश, संस्कृति और धर्म की उन्नति के लिए अनेकों कार्य किए। उनका सम्पूर्ण जीवन मानवता जाति के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने चारों वेदों के शतकम् का विस्तार से वर्णन किया। इस कार्यक्रम की विशेष अतिथि प्रिंसीपल डा. नीलम कामरा जी विशेष रूप से पधारी। इनके अतिरिक्त प्रिंसीपल डा. पुष्विन्द्र वालिया जी, प्रिंसीपल डा. नीरा शर्मा जी, प्रिंसीपल डा. विपन जिशतु, प्रिंसीपल अंजना गुप्ता जी, प्रिंसीपल अजय बेरी जी, प्रिंसीपल मनोज शर्मा जी, प्रिंसीपल इन्दु अरोड़ा जी के अतिरिक्त केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर के महामन्त्री श्री राकेश मेहरा, कोषाध्यक्ष श्री जुगल किशोर आहूजा, हीरा लाल कदारी, डा. रविन्द्र मोहन शर्मा, मुकेश आनन्द, दिनेश आर्य, प्रवीन तलवाड़, दीपक महाजन, संदीप आहूजा, रविन्द्र आहूजा, अतुल मेहरा, जतिन्द्र मल्होत्रा, विश्वा नाथ एवम् अमृतसर की समस्त आर्य समाजों के सभी पदाधिकारी और नगर के गणमान्य व्यक्ति सपरिवार सहित कार्यक्रम में सम्मिलित होकर इसे शोभान्वित किया।

कार्यक्रम के अंत में दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द सरस्वती जी ने आशीर्वचन दिए तथा महामन्त्री श्री राकेश मेहरा जी ने सब का धन्यवाद किया।

तत्पश्चात् ऋषि लंगर वितरण किया कया।

-राकेश मेहरा, महामन्त्री

दयानन्द बोधोत्सव सोल्लास सम्पन्न

उपरोक्त आर्य समाज की इकाई में महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध-उत्सव का शुभारम्भ संध्या से हुआ उसके पश्चात् विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें चारों दिशाओं में डा. पूर्णचन्द, अनिल मारवाह, योगराज शर्मा तथा जीवेश शर्मा सपत्नीक यजमान रहे। पंडित सुरेन्द्र कुमार के पौराहित्य में अग्नयाधान तथा जल प्रसेचन के पश्चात् यज्ञ प्रार्थना ''यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्जवल कीजिये। छोड़ देवें हल कपट को मानसिक बल दीजिये के भारी उद्घोष के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

पंडित योगराज शर्मा व आजाद सिंह 'लहरी' की भजन मण्डली ने भजनों के माध्यम से समाज में फैले अंधविश्वास, पाखण्ड तथा कुरीतियों पर करारी चोट कर श्रोताओं को एक सार्थक संदेश दिया। जिसका श्रोताओं ने करतल ध्वनि से समर्थन किया।

मुख्य वक्ता के रूप में आर्य जगत के ख्याति लब्ध प्रतिष्ठित आमन्त्रित विद्वान डा. पूर्णचन्द ने बोध-उत्सव पर प्रकाश डालते हुए महा शिवरात्रि के पश्चात बोधोत्सव को एक क्रान्ति पर्व बताया। दयानन्द ने शिवरात्रि का व्रत रख शिव के दर्शन की आकांक्षा पाली परन्तु चूहे को उछल कूद उनके सपने को चूर कर गयी और एक सच्चे शिव की खोज में उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आहूत कर दिया। 14 नवंबर 1860 को गुरु विरजानन्द से शिक्षा का प्रारम्भ कर विश्व में पाखण्ड के विरुद्ध पावन उद्घोष करते हुए 377 प्रमाणिक ग्रन्थों को साढ़े तीन महीने में अध्ययन कर अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की जिसमें वेद को परम प्रमाण मानते हुए मानव जीवन के हर पहलू पर ऋषि ने बेबाक कलम चलायी है। विश्व कल्याण के लिए आर्ष ग्रन्थों की नसीहत दी है।

कार्यक्रम का समापन शान्ति पाठ से हुआ। संचालन नरेन्द्र गर्ग ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सहयोगी रहे। राजकुमार आर्य, कैलाश चन्द्र, रमेश राजा, दिनेश आर्य, राजीव दहिया, प्रदीप कुमार, आशीष कुमार, दरेश क्वात्रा, निमित क्वात्रा, विजय गुप्ता, डा. राजवीर वर्मा, रोशनलाल, रघुनन्दन आर्य, ओम प्रकाश आर्य, सुरेन्द्र चौहान शोभा आर्य, शान्ति देवी, नीलम क्वात्रा, सुमन गुप्ता, रेखा मरवाह, अमर सिंह, कलावती, सेवाराम आर्य रहे।

आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया

आर्य समाज मंदिर फतेहगढ़ चूड़ियां जिला गुरदासपुर में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर आर्य समाज के सदस्य हवन यज्ञ करते हुये। इस अवसर पर छह हवनकुंडों पर यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से आहुतियां प्रदान कीं।

आर्य समाज फतेहगढ़ चूड़ियां में दिनांक 4 मार्च 2019 सोमवर को बोधोत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्रात: 9:30 बजे से 12:15 बजे तक चला था। छ: हवनकुण्ड़ों पर यजमानों ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ किया। यज्ञ का संचालन पं. सुखदेव जी अमृतसर वाले ने किया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री दीपक सोनी धर्मपत्नी श्रीमती अनु सोनी, श्री नरेश सच्चर धर्मपत्नी श्रीमती सुमी बाला, श्री आशु कुन्द्रा धर्मपत्नी श्रीमती राधिका कुन्द्रा, श्री वरूण कुन्द्रा धर्मपत्नी श्रीमती सपना कुन्द्रा, श्री नरेश बावा धर्मपत्नी मंजू बावा, श्री रमेश कुमार आदि सभी अपने परिवार सहित इस महायज्ञ में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर बहुत सुन्दर प्रभु भक्ति तथा महर्षि दयानन्द के जीवन पर आधारित भजन एवं प्रवचन हुए। ऋषि दयानन्द के जीवन तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश ड़ाला गया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बालक मूलशंकर के रूप में जो बोध प्राप्त किया था उसी के परिणामस्वरूप उनमें सच्चे शिव को प्राप्त करने की अभिलाषा जागृत हुई और उन्हें महर्षि दयानन्द बना दिया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने महर्षि दयानन्द द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर श्री सत्यपाल शर्मा, श्री हीरा लाल, श्री राज कुमार, श्री शुभ लाल, श्री राहुल शर्मा, श्री बनवारी लाल, श्री सुखदेव सिंह काहलों, श्री हरपाल सिंह नागरा, श्री डॉ. बलविंदर सिंह, श्री जागीर सिंह, श्री राजीव कुमार, श्री बलदेव सिंह, श्री कुलबीर कुमार जोशी, श्री सुरेन्द्र कुमार, श्री नितिन महाजन, श्री मनदीप कुमार, श्री सुखपाल सिंह रंधावा, श्री हरजिंदर सिंह, श्री नरेन्द्र पांधी, श्री सुनील शर्मा, डा. मोहन लाल, श्री जसवन्त सिंह, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री दीपक भाटिया, श्री कर्मवीर, श्री मनोज कुमार, श्री मोहन सिंह, श्री गुरदयाल सिंह, श्री रतनलाल, श्री संदीप कुमार, श्री जनक राज शर्मा, श्री इन्द्रजीत सिंह, श्री विशाल पान्धी, श्री देवन पान्धी, श्री हेमन्त चतरथ, श्री सौरभ, श्री राकेश शर्मा, श्री नरेन्द्र भण्ड़ारी, श्री हरीश सानन, श्री नरेश सोढ़ी, श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री कुन्दन लाल नैय्यर, श्री राम गुलाटी, श्री भगवान गुलाटी, श्रीमती चान्द कुन्दरा, श्रीमती निर्मल कान्ता, श्रीमती शशि महाजन, श्रीमती निर्मल पान्धी, श्रीमती जीवन कुन्द्रा आदि आर्यजन उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य समाज के सभी अधिकारियों ने अपना योगदान दिया। इस कार्यक्रम में श्री शोभ राज, श्री विजय कुमार कुन्द्रा प्रधान, श्री अशोक कुमार पान्धी उपप्रधान, श्री सतीश कुमार सच्चर, श्री रमेश कुमार कोषाध्यक्ष ने विशेष सहयोग दिया। इस अवसर पर शहर के कई गणमान्य व्यक्ति पधारे हुये थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात प्रसाद बाँटा गया और आए हुए सभी आर्यजनों ने प्रात:राश ग्रहण किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

सतीश कुमार सच्चर
मन्त्री आर्य समाज

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव

आर्य समाज नवांकोट अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव डा. प्रकाश चन्द प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में 7 मार्च से 10 मार्च 2019 तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात:काल को आर्य समाज में वेद प्रचार चलता रहा तथा सायं को परिवारों के अन्दर कार्यक्रम चलता रहा जिसमें बहु-संख्या में लोगों ने सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाया। पंडित बनारसी दास आर्य, श्री चरनजीत लाल ठुकराल तथा श्री बाल किशन एडवोकेट के घरों में सत्संग किये गये जिसमें आचार्य नारायण सिंह जी ने पाँच यज्ञों की महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। हरिद्वार से पधारे योगाचार्य श्री सुरिन्द्र कुमार जी ने योग व योगी महर्षि दयानन्द पर प्रकाश डाला। कोयल जैसी सुरीली आवाज़ वाली उभरती हुई गायिका कुमारी शिवानी आर्य ने समय बांध दिया। लोग बार-बार सुनने की सिफारिश करने लगे। 10 मार्च को कार्यक्रम का नज़ारा ही कुछ और था। प्रात: आचार्य नारायण सिंह जी ने यज्ञ के ब्रह्मा का पद सुशोभित किया। लक्षमण कुमार तिवारी जी तथा कीमती लाल जी सारे परिवार के साथ यज्ञमान बने। पं. सत्यपाल पथिक जी अपने सारे परिवार के साथ विशेष रूप से पधारे। भजनों का विशेष कार्यक्रम कुमारी शिवानी आर्य तथा उसके पिता श्री हरविन्द्र कुमार जी ने प्रस्तुत किया। योगाचार्य श्री सुरिन्द्र कुमार तथा आचार्य नारायण सिंह जी ने महर्षि के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। विशेष अतिथि श्री अशोक परूथी जी ने नौजवानों को आर्य समाज से जुड़ने की प्रेरणा दी। बाबू सरदारी लाल आर्यरत्न के भाषण से हाल तालियों से गूंजता रहा तथा देव दयानन्द के नारे लगते रहे। स्त्री जाति के उत्थान के लिये जो कुछ देव दयानन्द ने किया इस पर डाक्टर स्वामी मधुरानन्दा जी ने प्रकाश डाला। आर्य समाज की ओर से श्री लक्षमण तिवारी, श्री चरनजीत लाल ठुकराल तथा श्री कीमती लाल जी के परिवार को सम्मानित भी किया गया। माता जगदीश रानी ने यज्ञ में आहुति डाली तथा आर्य समाज को 10 कुर्सियां दान में दी।

बाबू सरदारी लाल आर्यरत्न, श्री अशोक परूथी जी, सुदेश आर्य तथा रमेश कुमार बैंक मैनेजर को भी आर्य समाज की ओर से शालें व शील्डें दे कर सम्मानित किया गया। अन्त में पंडित सत्यपाल पथिक जी ने अमृतसर के दिग्गज आर्य समाजी विद्वानों का स्मरण करवाया तथा उनकी तरह लगन तथा परिश्रम से आर्य समाज का कार्य करने की प्रेरणा दी तथा आर्य समाज के सभी सदस्यों को अपना हार्दिक आशीर्वाद दिया। शांति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर वितरण किया गया। इस शुभ कार्यक्रम में श्री बाल किशन एडवोकेट, विनोद मदान, अंकित मदान, विजय आनन्द, राज कुमार योगाचार्य, अशोक लाहौरिया, धनी राम, हरजिन्द्र सिंह, हरविन्द्र कुमार, सौरभ आर्य, भरत आर्य, सुदेश आर्य निर्मल आर्य का भरपूर सहयोग मिलता रहा। **-पं० बनारसी दास आर्य**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।